International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 03, March 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हिमालय क्षेत्र भूराजनीति

डॉ. राकेश कुमार चंद्राकर
सहायक प्राध्यापक (भूगोल)
महंत लक्ष्मीनारायण दास महाविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

विजय कुमार शर्मा
क्रीडाधिकारी (खेल विभाग)
महंत लक्ष्मीनारायण दास महाविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

शोध संक्षेपिका :–हिमालय की उत्पत्ति क्रीटेशियस काल में 840 लाख वर्ष पूर्व भारतीय प्लेट ने तेजी से उत्तर की ओर गति प्रारंभ की तकरीबन 6000 कि. मी. की दूरी तय की हिमालय को पर्वत राज भी कहते है। जिसका अर्थ पर्वतों का राजा, कालिदास तो हिमालय को पृथ्वी का मान दण्ड मानते है। हिमालय की पर्वत श्रृंखलाएं मध्य हिमालय, कुमाऊं हिमालय, असम हिमालय। हिमालय पर्वत का निर्माण लगभग 50 मिलियन वर्ष पहले भारतीय और यूरेशियन टेक्नोनिक प्लेटों के बीच टकराव के कारण हुआ था। इस टकराव ने प्लेटों के बीच की सबसे ऊंची पर्वत श्रृंखला का निर्माण हुआ जिसकी चोटियां 29000 फीट से अधिक ऊंची है जिसमें माऊंट एवेरेस्ट भी शामिल है।

हिमालय भारत की धरोहर है, हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम "बन्दर पुच्छ" है यह चोटी उत्तराखण्ड की टिहरी गुढ़वाल जिले में स्थित है जिसकी ऊंचाई 20X31 फुट है। हिमालय पर्वत माला की 2400 किलो मीटर की सीमा कई राज्यों की सीमाएं निर्धारित करती है, यह कश्मीर में विवादित पाकिस्तान भारत सीमा से शुरू होकर विवदित चीन– भारत सीमा, विवादित भारत– नेपाल सीमा, हल की गई चीन– नेपाल सीमा, विवादित चीन– भूटान सीमा और अंत में विवादित चीन– भारत सीमा के पूर्वी भाग से दक्षिण पूर्व में घुमती है। अंग्रेजों ने हिमालय को अपनी प्राकृतिक उत्तरी सीमा माना था, इस दृष्टिकोण से हिमालय को एक बार बफर जोन के रूप में देखा गया जिसे धमकाकर आधीन किया जा सकता था। पूर्वी हिमालय में नेपालियों ने सुधार वादी संघर्षो के जरिए भूराज नीति के खिलाफ आवाज उठाई थी। उपनिवेश वाद के बाद भारत ने पूर्वी हिमालय में क्षेत्रीयता को मजबूत करने के लिए उसी भूराजनीति को जारी रखा। नेपालियों के प्रतिरोध के इलाको को भारतीय राज्य में सह योजित कर लिया था जिसमें भूटान ने नेप ालियों को निकालने का फैसला किया। भारत के लिए हिमालय भौतिक शक्ति, आध्यात्मिक उत्थान सांस्कृतिक विविधता और रणनीतिक लाभ का प्रतीक है। हिमालय भारतीय उपमहाद्वीप और मध्य एशिया और चीन के बीच एक प्राकृतिक विभाजन के रूप में काम करता है।

इतिहास :–हिमालय भारत की धरोहर है। हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम "बंदर पुच्छ है" यह चोटी उत्तराखण्ड की टिहरी गढ़वाल जिले में स्थित है जिसकी ऊंचाई 20731 फुट है।

शब्दकोष :–पर्वत श्रृंखला, धार्मिक महत्व, जल स्त्रोत, राजनीतिक महत्व, प्राकृतिक संस ाधन, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक आर्थिक बदलाव, भौतिक विकास, विशेष राजनीतिक संदर्भ, जल संसाधन, सामरिक संबंध।

हिमालय क्षेत्र भू राजनीति का महत्व :– हिमालय क्षेत्र भूराजनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्व पूर्ण है क्योंकि यह क्षेत्र कई देशों की सीमाओं को छूती है वहां के भूगविभागीय संसाधनों का विशेष महत्व है यहां के पर्वतीय श्रृंखला का सबसे बड़ा प्रभाव है जसेमें पाकिस्तान, भारत, चीन, नेपाल, भूटान और बंग्ला देश, देशों के महत्व सीमाओं और राजनीतिक रिश्तों पर विशेष प्रभाव पड़ता है यह क्षेत्र जल, ऊर्जा, वन्य जीवन और पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है हिमालयी प्रदेश में राष्ट्रीय सुरक्षा, रक्षा स्थितियों का भी महत्व बढ़ जाता है, इस क्षेत्र का भौतिक, भौगोलिक और राजनीतिक महत्व भी है।

हिमालय क्षेत्र की अवधारणाएं :–हिमालय को विश्व की सबसे बड़ी पर्वत श्रृंखला माना जाता है यहां के पर्वतीय श्रृंखला में बर्फीले चोटियां और जलवायु है, हिमालय के वन्य जीवन और वनस्पति जल संसाधन से जुड़ी है इस क्षेत्र में अनेक प्रकार के पेड पौधें जानवरों के जीवन के लिए है। हिमालय क्षेत्र के बर्फ से बने ग्लेशियर्स और गंगा, यमुना, ब्रम्हपुत्र, इन्दुस जैसी नदियों का स्त्रोत है ये नदियां भारत के मुख्य जीवनधारा के रूप में महत्वपूर्ण है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 03, March 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हिमालय क्षेत्र की कई धार्मिक संस्कृति के लिए पवित्र माना जाता है यहां के पर्वतों पर कई मंदिर और तीर्थ स्थल है यहां हिन्दु, बौद्ध और जैन धर्म के श्रद्धालुओं के लिए विशेष महत्वपूर्ण हैं, हिमालय क्षेत्र में जलवायु बदलाव का सीधा प्रभाव पड़ता है जिससे यहां के जल संसाधनो, खेती और जन जीवन पर प्रभाव पड़ता है। हिमालय क्षेत्र के राजनीतिक महत्व के पीछे कई कारण है इस क्षेत्र में कई देशों की सीमाएं मिलती है यहां के संसाधनों के नियंत्रण और प्रबंधन पर अभियान होते रहते है।

हिमालय क्षेत्र के भविष्य की संभावनाएं :—जलवायु परिवर्तन के परिणाम से हिमालय पर्वत में बर्फ का पिघलाव और ग्लेशियर्स की संकट आ सकती है यह नदियों के जल स्तर और पानी की अपूर्ति का प्रभाव डाल सकता है। हिमालय के पर्यावरण संरक्षण के लिए कई उपाय करने की आवश्यकता है। यहां वन्य जीवन की संरक्षण, जल संर क्षण और जलवायु संरक्षण के लिए समुदायों का सहयोगी की आवश्यकता है। हिमालय क्षेत्र के समाज जीवन शैली और आर्थिक विकास में बदलाव आ सकता है, जल संसाधनों की कमी पर्यटन के प्रभाव और उत्पादन के तरीकों में परिवर्तन हो सकता है। हिमालय क्षेत्र भूकम्पों और अन्य प्राकृतिक आपदाओं की संभावना हो सकती है जिससे जन जीवन की सुरक्षा प्रभावित हो सकती है। हिमालय क्षेत्र में भौतिक विकास की गति बढ़ सकती है जिसे इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास सड़क नेटवर्क इससे पर्यावरण प्रभाव हो सकता है।

हिमालय क्षेत्र का राजनीतिक महत्व :—हिमालय पर्वत क्षेत्र कई देशों के लिए राजनीतिक संदर्भ प्रदान करता है जैसे, भारत, चीन, पाकिस्तान के मध्य दावे और विवादों के संबंध में हिमालय का महत्वपूर्ण योगदान है, हिमालय पर्वत से निकलने वाली नदियां जैसे गंगा, यमुना, ब्रम्हपुत्र आदि भारतीय जल संसाधन के लिए महत्वपूर्ण है इन नदियों पर नियंत्रण और प्रबंधन राजनीतिक विवादों का कारण बन सकता है। हिमालय पर्वत क्षेत्र का पर्यावरण संरक्षण एक अत्यंत महत्वपूर्ण राजनीतिक मुद्दा है। जलवायु परिवर्तन, वन जीवन संरक्षण और जल संसाधनों के प्रबंधन संबंधित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नीतियों पर विशेष प्रभाव पड़ता है। हिमालय क्षेत्र देशों के बीच सामरिक संबंधों का महत्व है, इसमें सामरिक सुरक्षा, साझा, रोग नियंत्रण और साझा अनुसंधान और विकास शामिल हो सकता है।

हिमालय पर्वत क्षेत्र में अपशिष्ट प्रबंधन के आभाव :—हिमालय पर्वत क्षेत्र में कचरे का सही संसाधन और प्रबंधन की कमी है इसका मुख्य कारण बड़ी परिसंख्या और पर्यटन के कारण इस क्षेत्र में कचरे का उत्पादन बढ़ गया है लेकिन इसे सही ढंग से प्रबंधित नहीं किया जाता है। जल संक्राति हिमालय क्षेत्र की एक और बड़ी समस्या है बिना विशेष ध्यान दिये उत्पन्न होने वाले कचरे और प्रदूषण के कारण नदियों और जल स्त्रोतो में प्रदूषण होता ही रहेगा। हिमालय पर्वत क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के कारण अपशिष्ट प्रबंधन की चुनौनियों बढ़ गयी है हिमालय पर्वतीय क्षेत्र में स्थानीय समुदायों के लिए अपशिष्ट प्रबंधन की सही– प्रक्रियाएं और सुविधाएं उपलब्ध नही है। इससे समुदायों के स्वास्थ्य और पर्यावरण को खतरा हो सकता है।

इन अभावों के कारण हिमालय क्षेत्र में अपशिष्ट प्रबंधन के लिए सकारात्मक नीतियों और प्रयासों की आवश्यकता है ताकि इस क्षेत्र का पर्यावरण और सामाजिक संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके।

हिमालय के प्रति धारणाएँ :—हिमालय के बारे में हमारी बौद्धिक चिस्ताओं को पैमाने पर भय, संदेह, प्ररति द्वदिता, विदेशी आक्रमण और सैन्य अतिक्रमण की धारणा ने आकार दिया है जबकि वर्तमान में सिनों फोबिया (चीन संबंधी) था पाकिस्तान फोबिया है। जो हिमालय के संबंध में हमारी चित्ताओं का निर्धारण करता है वस्तुतः हिमालय के बारे में हमारी ये धारणाएं दिल्ली बीजिंग इस्लामाबाद तथ्य से जुड़ी है न कि हिमालय पर्वत से है।

हिमालय की सामरिक धारणा :—हिमालयी अध्ययनों के मामले में राष्ट्रवाद की अनिवार्यता ने क्षेत्ररीकरण की राजनीतिक बाध्यता को जन्म दिया है हिमालयी अध्ययन पर राष्ट्रीय मिशन पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की एक योज ना है। जो अनुसंधान और तकनीकी नवाचारों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है हॉलाकि यह मिशन केवल भारतीय हिमालयी क्षेत्र के लिए ही नीति निर्माण तक की सीमित है। मिशन दस्तावेज में स्पष्ट किया गया है कि भारत सरकार इस मिशन के साथ इस तथ्य को स्वीकार करती है हिमालय पारिस्थिति की तंत्र भारत की पारिस्थितिक सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है हिमालय के बारे में भारत की धारण यर्थातवाद से प्रभावित है क्योंकि हिमालय समुदाय पारिस्थिति की या बाजार जैसी वैकल्पिक संकल्पनाओं के विपरीत संपरभु क्षेत्र ीरीयता के संदर्भ में परिभाषित एक क्षेत्र है।

ऐतिहासिक गतिरोध :—हिमालय का क्षेत्ररीयकरण एक औपनिवेशक धारण है हिमालयी भूभाग के अंतर्गत आने वाले पांच सम्प्रभुता से स्तर सोचने में विफल रहे है। हिमालयी क्षेत्र से जुड़े विभिन्न देशों द्वारा सीमार्वती को

अपनाया जाता है ताकि वे अपने हिमालयी भूभाग को सुरक्षित कर सकें।

इन सभी कारणों से हिमालय क्षेत्र को एक महत्वपूर्ण भौगोलिक, प्राकृतिक और राजनीतिक क्षेत्र माना जाता है जिसका महत्व कई देशों के लिए अलग– अलग हो सकती है कई संभावनों को ध्यान में रखते हुए हिमालय क्षेत्र का विकास और प्रबंधन में संरक्षणीय समाधानों की आवश्यकता है ताकि यह समृद्ध और स्थिर भविष्य बना रहे हिमालय पर्वत क्षेत्र राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक महत्व भी रखता है इसे विभिन्न देशों के मध्य समझौते और समर्थन का केन्द्र बनाता है।

निष्कर्ष :–इन सभी कारणों से हिमालय क्षेत्र को एक महत्वपूर्ण भौगोलिक प्राकृतिक और राजनीतिक क्षेत्र माना जाता है जिसका महत्व कई देशों के लिए अलग क्रनाे हो सकती है कई संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए हिमालय क्षेत्र की विकास और प्रबधंन में संरक्षणीय समाधानों की आवश्यकता है ताकि यह समृद्धि और स्थिर भविष्य बना रहे हिमालय पर्वत क्षेत्र राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक महत्व भी रखता है इसे विभिन्न देशों के मध्य समझौते और समर्थन का केन्द्र बनाता है।

भारत में हिमालय पर्वत माला देश के भीतर जलवायु और मौसम के परिवर्तन को नियंत्रित करती है देश के दक्षिणी और उत्तरी किनारो पर अपने भारतीय भौगोलिक कल्याण की एक महत्वपूर्ण आधारशीला के रूप में दिखाई देता है।

संदर्भ सूची :–

1. 1. Balokhra, J.M. (1999) The wonderland of Himachal Pradesh (Revised and enlarged IV संस्करण) New Delhi H.G. Publications.
2. Kohil, M.S. (2002) “Shivalik Range” Mountains of India, Tourism, Adventure and Pilgrimege Indus Publishing.
3. नारायण सिंह राणा – हिमालय एवं पर्यावरण संरक्षण तकनीकी
4. डॉ. सी. बी. मोमेरिया – भारत का भूगोल (SEM- 6 NEP 2020) साहित्य भवन, आगरा
5. डॉ. कविता चौधरी – भारत का भूगोल– शिवांग प्रकाशन

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 03, March 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हिमालय क्षेत्र भूराजनीति

हिमालय क्षेत्र भूराजनीति का महत्व :– हिमालय क्षेत्र भूराजनीतिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह क्षेत्र कई देशों की सीमाओं को छूती है वहां के भूगर्भीय संसाधनों का विशेष महत्व है, यहां के पर्वतीय श्रृंखला का सबसे बड़ा प्रभाव है। जिसमें पाकिस्तान, भारत, चीन, नेपाल, भूटान और बंग्ला देश देशों के मध्य सीमाओं औरराजनीतिक रिश्तों पर विशेष प्रभाव पड़ता है, यह क्षेत्र जल, ऊर्जा, वन्य जीवन और पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है, हिमालयी प्रदेश में राष्ट्रीय सुरक्षा रक्षा स्थितियों का भी महत्व बढ़ जाता है इस क्षेत्र का भौतिक, भौालिक और राजनीतिक महत्व भी है।

हिमालय क्षेत्र की अवधारणाएँ :–

01. पर्वत श्रृंखला :– हिमालय को विश्व की सबसे बड़ी पर्वत श्रृंखला माना जाता है यहां के पर्वतीय श्रृंखला में बर्फीले चोटियां और जलवायु है।
02. प्राकृतिक संसाधन :– हिमालय के वन्य जीवन और वनस्पति, जलसंसाधन से जुड़ी है इस क्षेत्र में अनेक प्रकार के पेड़–पौधे जानवरों के जीवन के लिए है।
03. जल स्त्रोत :– हिमालय क्षेत्र के बर्फ से बने ग्लेशियर्स और गंगा, यमुना, ब्रम्हपुत्र, इन्दुस जैसी नदियों का स्त्रोत है ये नदियां भारत के मुख्य जीवनधारा के रूप में महत्वपूर्ण है।
04. धार्मिक महत्व :– हिमालय क्षेत्र कई धार्मिक संस्कृति के लिए पवित्र माना जाता है, यहां के पर्वतो पर कई मंदिर और तीर्थ स्थल है यहां हिन्दु, बौद्ध और जैन धर्म के श्रद्धालुओं के लिए विशेष महत्वपूर्ण है।
05. जलवायु बदलाव :– हिमालय क्षेत्र में जलवायु बदलाव का सीधा प्रभाव पड़ता है जिससे यहां के जल संसाधनों, खेती और जनजीवन पर प्रभाव पड़ता है।
06. राजनीतिक महत्व :– हिमालय क्षेत्र के राजनीतिक महत्व के पीछे कई कारण है इस क्षेत्र में कई देशों की सीमाएं मिलती है यहां के संसाधनों के नियंत्रण और प्रबंधन पर अभियान होते रहते है।

हिमालय पर्वत के भविष्य की संभावनाएँ :–

01. जलवायु परिवर्तन :– जलवायु परिवर्तन के परिणाम से हिमालय पर्वत में बर्फ का पिघलाव और ग्लेशियर्स की संकट आ सकती है यह नदियों के जलस्तर और पानी की अपूर्ति पर प्रभाव डाल सकता है।
02. पर्यावरण संरक्षण :– हिमालय के पर्यावरण संरक्षण के लिए कई उपाय करने की आवश्यकता है। यहां वन्य जीवन की संरक्षण, जल संरक्षण और जलवायु संरक्षण के लिए समुदायों का सहयोग की आवश्यकता है।
03. सामाजिक आर्थिक बदलाव :– हिमालय क्षेत्र के समाज, जीवनशैली और आर्थिक विकास में बदलाव आ सकता है। जल संसाधनों की कमी पर्यटन के प्रभाव और उत्पादन के तरीको में परिवर्तन हो सकता है।
04. भूकम्प और प्राकृतिक अपदाएं :– हिमालय क्षेत्र भूकम्पों और अन्य प्राकृतिक आपदाओं की संभावना हो सकती है। जिससे जनजीवन की सुरक्षा प्रभावित हो सकती है।
05. भौतिक विकास :– हिमालय क्षेत्र में भौतिक विकास की गति बढ़ सकती है जैसे इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास सड़क नेटवर्क इससे पर्यावरण प्रभाव हो सकता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 03, March 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हिमालय पर्वत का राजनीतिक महत्व :–

01. जल संसाधन :–हिमालय पर्वत से निकलने वाली नदियां जैसे गंगा, यमुना, ब्रम्हपुत्र आदि भारतीय जल संसाधन के लिए महत्वपूर्ण है। इन नदियों पर नियंत्रण और प्रबंधन राजनीतिक विवादों का कारण बन सकता है।

02. पर्यावरण संरक्षण :–हिमालय पर्वत का पर्यावरण संरक्षण एक अत्यंत महत्वपूर्ण राजनीतिक मुद्दा है। जलवायु परिवर्तन, वन– जीवन संरक्षण और जल संसाधनों के प्रबंधन संबंधित राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय नीतियों पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

03. सामरिक संबंध :–हिमालय क्षेत्र देशों के बीच सामरिक संबंधों का महत्व है। इसमें सामरिक सुरक्षा, साझ, रोग नियंत्रण और साझ अनुसंधान और विकास शामिल हो सकता है।

हिमालय पर्वत में अपशिष्ट प्रबंधन के अभाव :–

01. कचरे की सही संसाधन और प्रबंधन की कमी :–हिमालय क्षेत्र में कचरे की सही संसाधन और प्रबंधन की कमी है इसका मुख्य कारण बड़ी परिसंख्या और पर्यटन के कारण इस क्षेत्र में कचरे का उत्पादन बढ़ गया है। लेकिन इसे सही ढ़ंग से प्रबंधित नहीं किया जाता है।

02. जल संक्राति और प्रदूषण :–जल संक्राति हिमालय क्षेत्र की बड़ी समस्या है बिना विशेष ध्यान दिये उत्पन्न होने वाली कचरे और प्रदूषण के कारण नदियों और जल स्त्रोतो में प्रदूषण होता है

03. जलवायु परिवर्तन का प्रभाव :–हिमालय क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के कारण अपशिष्ट प्रबंधन की चुनौतियां बढ़ गई है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 03, March 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

04. स्थानीय समुदायों की संरक्षण :– हिमालय क्षेत्र में स्थानीय समुदायों के लिए अपशिष्ट प्रबंधन की सही प्रक्रियाएं और सुविधाएं उपलब्ध नहीं है। इससे समुदायों के स्वास्थ्य और पर्यावरण को खतरा हो सकता है।

इन सभी कारणों से हिमालय क्षेत्र को एक महत्वपूर्ण भौगोलिक, प्राकृतिक और राजनीतिक क्षेत्र माना जाता है जिसका महत्व कई देशों के लिए अलग अलग हो सकती है। कई संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए हिमालय क्षेत्र के विकास और प्रबंधन में संरक्षणीय और सुस्त समाधानों की आवश्यकता है।

ताकि यह समृद्ध और स्थिर भविष्य बना रहे हिमालय पर्वत क्षेत्र राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय राजनीतिक महत्व भी रखता है इसे विभिन्न देशों के मध्य समझौते और समर्थन का केन्द्र बनाता है।